Peer Reviewed Journal
(Impact Factor 5.125)

वाङ्मय

(त्रैमासिक हिन्दी पत्रिका)

सम्पादक
डॉ. एम. फ़ीरोज़ अहमद

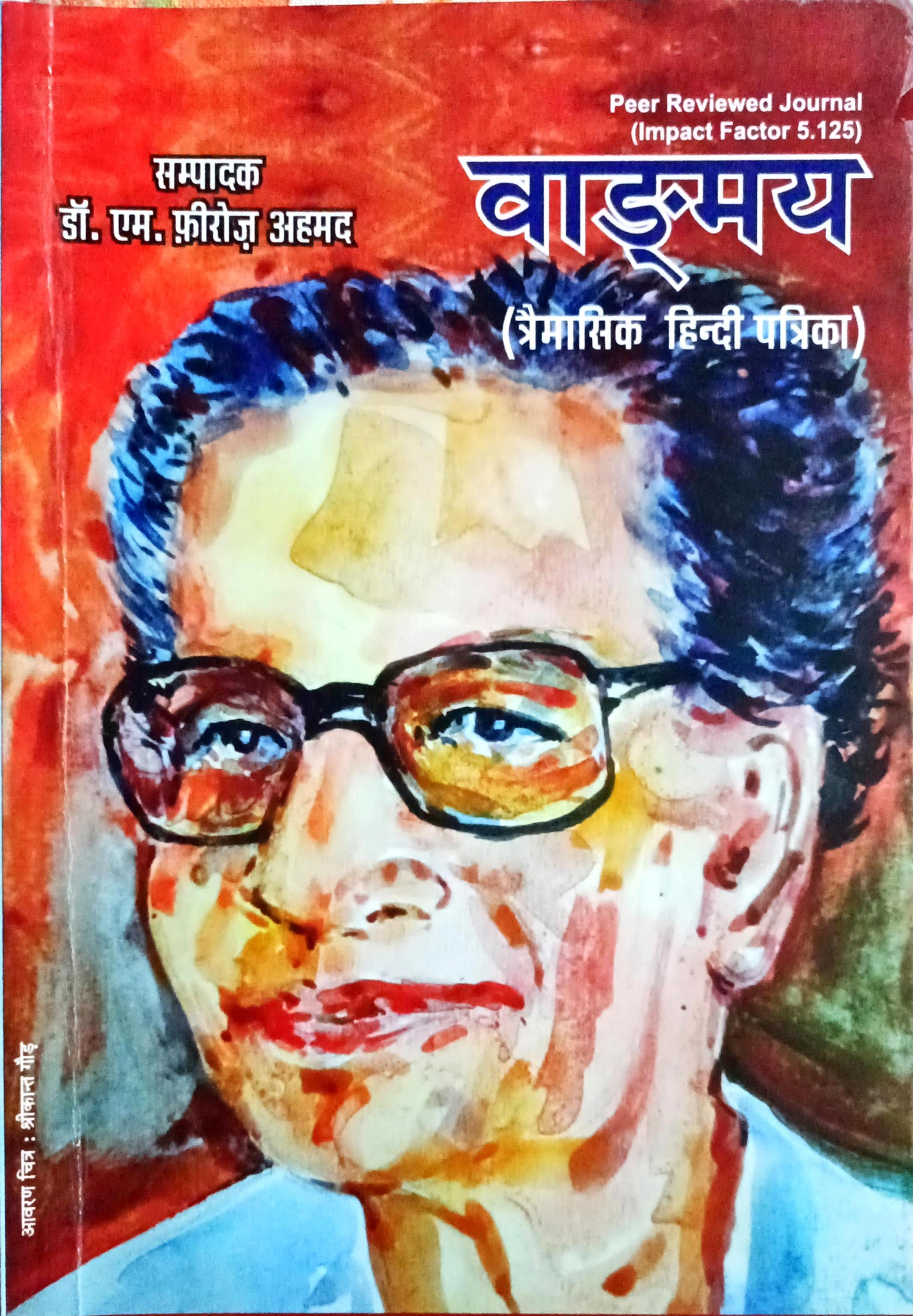

आवरण चित्र : श्रीकान्त गौड़

जनवादी कथाकार इसराइल

15. मजदूरों के कहानीकार इसराइल/139
डॉ. मोतीलाल
16. मजदूरों तथा हाशिए के समुदायों की संघर्ष चेतना (इसराइल- रोजनामचा के सन्दर्भ में)/148
डॉ. रमेश कुमार
17. यथार्थबोध के आस-पास/163
धीरेंद्र अस्थाना
18. इसराइल की कहानियों में मजदूरों का अनुभव यथार्थ/165
डॉ. चंद्रकांत सिंह
19. स्मृतियों से निरस्त कथाकार-इसराइल/171
प्रो. राधेश्याम सिंह
20. जनवादी कहानीकार इसराइल/181
डॉ. नितिन सेठी
21. लाल डायरी आम आदमी की जीवंत कथा/189
सुमन शर्मा

खण्ड-ख (उपन्यास पर आलोचना)

22. दु:खों का महाकाव्य और संघर्षों की वीरगाथा (संदर्भ : इसराइल कृत रोशन उपन्यास)/193
शिवचंद प्रसाद
23. रोशन : जहाँ सब कुछ बौना हो जाता है/204
अरुण माहेश्वरी
24. भारतीय सर्वहारा की पतली सतह पर : रोशन/210
सुरेन्द्र चौधरी
25. सर्वहारा की मुक्ति चेतना का संवाहक : रोशन/214
श्रीनिवास शर्मा

खण्ड-ग (कहानी/डायरी/सम्पादकीय/स्मरण/संस्मरण/साक्षात्कार/पत्र)

26. अध बना पुल/219
इसराइल
27. नई कमीज़/232
इसराइल

इसराइल की कहानियों में मजदूरों का अनुभव यथार्थ

डॉ. चंद्रकांत सिंह

इसराइल की अधिकांश कहानियाँ कोलकाता को आधार बनाकर लिखी गई हैं। कोलकाता के शहरों एवं नगरों को लेखक ने पूरी तन्मयता के साथ उकेरा है। उनकी कहानी को पढ़ते हुए मजदूरों की बस्ती, उनका जीवन-संघर्ष, उनकी आशा-आकांक्षा एक-एक कर आँखों के सामने चित्रित होते जाते हैं। लेखक ने निम्न-मध्यवर्गीय जीवन को समग्रता में ढालने का प्रयास किया है। मिलों में काम करने वाले मजदूरों, कोयला बीनने वाले कामगारों का जीवन धूल-धुसरित है, जिसकी कल्पना भी हम नहीं कर सकते। ये कहानियाँ वातानुकूलित कक्ष में रहने वाले कुलीन वर्ग की कहानियाँ नहीं हैं, जहाँ कल्पना और रोमान का संसार लहराता है बल्कि ये धूल में निथरी हुई आकृतियाँ हैं जो यथार्थ की रपट प्रस्तुत करती हुई, जीवन के सार-असार को देखती-समझती हैं। इन कहानियों को पढ़कर लगता है कि जीवन में जो अनाम और अदृश्य हैं, जिनकी चर्चा तक नहीं होती, उन्हें आधार बनाकर लेखक जीवन का महाख्यान रचते हैं। उनके कथा-लोक में करुणा और रुदन की छायाएँ हैं जो पाठकों को नमी प्रदान करने के साथ प्रेरणा भी देती हैं। उनके रचना-संसार से गुजरते हुए अनुभव होता है कि लेखक ने उन लोगों के अनुभव सत्य को रखा है जिन्हें समाज में रत्ती भर भी जगह नहीं मिलती। जो धूल-धक्कड़ खाते हैं, जिनके बच्चे अंग्रेज़ी स्कूलों में पढ़ने की बजाय सरकारी स्कूलों में भटकते हैं। जिन्हें मखमली गद्दों-लिहाफों की बजाय दरी बिछे हुए अहाते में ताउम्र रहने की आदत है। इसराइल की कहानियाँ सामाजिक सच्चाइयों को परत-दर-परत खोलती हैं, यही नहीं इन कहानियों के द्वारा लेखक ने समाज में हो रहे परिवर्तनों से पाठकों को अवगत भी कराया है। 'रोजनामचा' संग्रह की सभी कहानियाँ कथ्य एवं विषय-बोध की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हैं। सभी कहानियों में समय के यथार्थ को व्यक्त करने की गहन छटपटाहट है जिसे कथाकार ने ईमानदारी से रचा है। संग्रह की प्रतिनिधि कहानी 'रोजनामचा' है जो मिल मजदूरों की पीड़ा को सामने लाती है। इस कहानी में केदार, राजन, साँवली, नक्कू, और धोकल जैसे चरित्रों के माध्यम से कहानीकार ने दिखाया है